प्रार्थना हुई जिसके बाद 'स्वागत गीत' गाया गया। तत्पश्चात्
लोकगीत, भावगीत, शास्त्रीय गायन और नृत्य, एकांकी, झलकियाँ, प्रहसन आदि अनेक
प्रत्येक कार्यक्रम के पश्चात् तालियों की झड़ी लग जाती। छात्रों के इन कार्यक्रमों की सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की।

विद्यालय की रिपोर्ट–सांस्कृतिक-कार्यक्रमों के पश्चात् प्रधानाचार्य महोदय ने विद्यालय की प्रगति का लेखा-जोखा
रिपोर्ट में प्रस्तुत किया जिसमें परीक्षा-परिणाम, खेलकूद तथा अन्य क्षेत्रों में विद्यालय के चहुँमुखी विकास का विवरण था।

पुरस्कार वितरण–प्रधानाचार्य द्वारा विद्यालय की प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करने के बाद, मुख्य अतिथि ने विभिन्न क्षेत्रों
उल्लेखनीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किए। उसके बाद बारी थी–मुख्य अतिथि के उद्बोधन की। मुख्य-अतिथि
ने अपने भाषण में विद्यालय के प्रधानाचार्य तथा आचार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की तथा विद्यालय की चहुँमुखी प्रगति की मुक्त कंठ से
सराहना की।

समापन–विद्यालय के व्यवस्थापक ने मुख्य-अतिथि के प्रति आभार व्यक्त किया तथा साथ ही सभी आचार्यों एवं उपस्थित
अभिभावकों को भी धन्यवाद दिया। प्रधानाचार्य द्वारा अगले दिन का अवकाश घोषित किए जाने पर भी छात्रों ने करतल ध्वनि की। लगभग
साढ़े चार बजे वंदे मातरम् के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ और उसके बाद सभी ने जलपान का आनंद लिया।

14. पेड़-पौधे और हम

लिखो व याद करो। **पेड़-पौधे तो जीवन हैं हम पेड़-पौधे से हैं। पेड़-पौधे हम से हैं।**

रूपरेखा : ✨ भूमिका ✨ शुद्ध वायु का आधार ✨ अन्य उपयोग ✨ उद्योग धंधों का आधार ✨ वृक्षों की कटाई ✨ पशु-पक्षियों का आश्रय ✨ भारतीय संस्कृति में वृक्षों का महत्त्व ✨ उपसंहार

भूमिका–पेड़-पौधों के साथ मानव का बहुत पुराना संबंध है। यदि ध्यान से देखा जाए, तो वृक्षों के अभाव में जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती। पेड़-पौधे मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं तथा उसका पालन-पोषण भी करते हैं। पेड़-पौधे केवल सौंदर्य एवं सुरक्षा के साधन ही नहीं हैं, अपितु हमारे जीवनदाता भी हैं।

शुद्ध वायु का आधार–जिस प्रकार माता अपने पुत्रों का पालन-पोषण करती है, ठीक वैसे ही पेड़-पौधे भी हमें शुद्ध वायु देकर हमें जीवित रखते हैं। सभी जानते हैं कि हम साँस द्वारा ऑक्सीजन लेते हैं तथा कार्बन डाइऑक्साइड छोड़ते हैं। पेड़-पौधे हमारे द्वारा छोड़ी गई दूषित कार्बन डाइऑक्साइड को ग्रहण कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

अन्य उपयोग–पेड़-पौधे हमें अनेक प्रकार के अनाज, फल, सब्जियाँ आदि देकर हमारा भरण-पोषण करते हैं। साथ ही घर तथा फर्नीचर बनाने के लिए लकड़ी, जलाने के लिए ईंधन, सजावट के लिए सुगंधित पुष्प तथा अनेक प्रकार की औषधियाँ प्रदान करते हैं।

उद्योग धंधों का आधार–पेड़-पौधों से प्राप्त अनेक पदार्थों पर देश के अनेक उद्योग-धंधे आश्रित होते हैं। कागज़, कपड़ा, चीनी, प्लाइवुड, दियासलाई, पटसन जैसे अनेक उद्योग-धंधे, पेड़-पौधों पर ही आश्रित हैं। पेड़-पौधे वातावरण को शुद्ध करने के साथ-साथ प्रदूषण को भी रोकते हैं। जहाँ पेड़-पौधे अधिक होते हैं, वहाँ वर्षा भी अधिक होती है। पेड़-पौधे भूमि को मरुस्थल बनने से रोकने में भी महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं।

वृक्षों की कटाई–बढ़ती हुई जनसंख्या तथा उद्योग-धंधों के कारण आज जिस प्रकार पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है, उसे रोकने में वृक्षों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्यवश आज जिस प्रकार वनों को काटा जा रहा है, उसके कारण सूखा, बाढ़, भूकंप जैसी प्राकृतिक विपत्तियों का सामना करना पड़ रहा है। वृक्षों की कटाई के कारण एक ओर तो शुद्ध वायु का अभाव होता जा रहा है, साथ ही प्रकृति भी कभी सूखे के रूप में, कभी बाढ़ के रूप में तथा कभी भूकंप के रूप में मुनष्य से बदला ले रही है।

पशु-पक्षियों का आश्रय–पेड़-पौधे मनुष्य के लिए ही नहीं, पशु-पक्षियों के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। पेड़-पौधों के अभाव में अनेक पशु-पक्षियों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया है तथा हरियाली के दर्शन दुर्लभ हो गए हैं।

भारतीय संस्कृति में वृक्षों का महत्त्व–भारतीय संस्कृति में वृक्षों को अत्यंत पवित्र माना गया है। हमारे यहाँ पीपल, आँवला, बरगद, तुलसी, आम, केला जैसे अनेक वृक्षों की पूजा की जाती है तथा वृक्षारोपण को अत्यंत पवित्र कार्य माना गया है। वृक्षों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार ने वन-महोत्सव का कार्यक्रम प्रारंभ किया जो प्रति वर्ष जुलाई माह में मनाया जाता है। आज वृक्षों की कटाई पर पाबंदी लगा दी गई है।

अभिनयगीत,
मोह लिया।

उपसंहार–हमारा कर्त्तव्य है कि हम अधिक से अधिक पेड़ लगाएँ और पहले से लगे पड़े पेड़ों की उचित देखभाल करें। पेड़-पौधे हमारे पूज्य हैं, हमारे अन्नदाता हैं, हमारा पालन-पोषण करते हैं, हमारे जीवनदाता हैं तथा अनेक प्रकार से हमारा उपकार करते हैं। अतः उनके संरक्षण में ही हमारा कल्याण है।